प्रातःक्लास 7-5-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे2 रूहानी बच्चे अभी जान गये हैं कि भक्ति और ज्ञान दोनो अलग चीज़ है। यह भी समझ गये हो भक्ति से दुर्गति होती है जरूर। क्यों कि इतने जो गिरे हैं जरूर कोई तो कारण होगा ना। यह भी बाप बच्चों को बताते हैं। बच्चों को कुछ भी मालूम नहीं था। घोर अंधियारे में थे। भक्ति-मार्ग है घोर अंधियारा। ज्ञान-मार्ग है घोर सोहरा। कलियुग में घोर अंधियारा, सतयुग में घोर सोहरा। यह भी अभी बाप ने बताया है। बच्चे यह भी समझते हैं ज्ञान को पढ़ाई, नालेज कहा जाता है। बच्चे जानते हैं कि भगवान राजयोग की पढ़ाई पढ़ाने वाला भी है इसलिए उनको ज्ञान का सागर कहा जाता है। शिव बाबा तो है ही निराकार। सबसे ऊंच ते ऊंच महिमा है ही निराकार की। वास्तव में निराकार तो तुम सभी आत्मायें भी हो। जानते हो हम सभी निराकार शालीग्राम है। एक बाप के बच्चे भाई-भाई हैं। यह तो कोई भी कहेंगे हम भाई-भाई हैं। एक बाप के बच्चे हैं। हम आत्मायें रहने वाले भी बाप के साथ हैं। उसको स्वीट सायलेन्स होम कहा जाता है। अभी बच्चों को अपना घर पूरा याद है। इतने जो भी आत्मायें हैं सभी अपने घर में ही रहते हैं। फिर नम्बरवार पार्ट बजाने आते हैं। यह तो सभी की बुधि में होना चाहिए। एक्टर्स हैं ना। तुम देखते हो रायल अच्छे2 एक्टर्स पिछाड़ी कितना लड्डू हो पड़ते हैं। कितने लोग उनको देखने लिए जाते हैं। वह सभी है जिसमानी। तुम रूहानी। जानते हो हम आत्मा हैं। यहां पार्ट बजाने आते हैं। पहले सुख का पार्ट फिर दुःख का पार्ट बजाते हैं। दुःख थोड़ा है। पिछाड़ी में दुःख होता है। आयु भी छोटी होती है। भारत की आयु बहुत बड़ी थी। इतनी आयु और कोई खण्ड की नहीं गाई जाती। सिवाय भारत के। यह भी राजयोगी थे। अभी भोगी हैं। योगी और भोगी यह भारत में ही गाया जाता है। बच्चों को बुधि में है सारे विश्व में भारत ही था। नाम भी भारतखण्ड था। देवीदेवताओं का खण्ड था। और कोई थे नहीं। और सभी पीछे आये हैं। दुःख भी पीछे होता है। जब नई दुनिया पुरानी बनती है। यह तो बिलकुल कामन बात है। नई सो पुरानी, पुरानी सो नई बनता है। रिपीट होता है ना। हम देवता सो असुर, असुर सो देवता बनते हैं। रामराज्य सो रावण राज्य, रावण राज्य सो राम-राज्य यह भारत की ही बात है। और कोई खण्ड के लिये यह बात नहीं है। उनको कहा ही जाता है कांटो का जंगल। फिर होगा फूलों का बगीचा। यह है आसुरी जंगल। वह है ईश्वरीय बगीचा। यह तो बहुत सहज समझने की बातें हैं। दिन प्रति दिन सहज होना ही है ड्रामा प्लेन अनुसार। यह तो निश्चय है* डीटी धर्म की स्थापना तो होनी ही है। चित्र में भी है ब्रहमा द्वारा स्थापना। नई दुनिया की स्थापना। तुम प्रदर्शनी आदि का उद्घाटन कराते हो, क्योंकि नई चीज़ है। हमेशा नई चीज़ का उद्घाटन होता है। बाप भी नई दुनिया का उद्घाटन करते हैं। पुरानी दुनिया के लिए तो उद्घाटन नहीं करते हैं। नई चीज़ की स्थापना का मुर्हत करते हैं। पुरानी चीज़ का मुर्हत होता ही नहीं। व्यापारी लोग भी पुराना खाता छोड़ते हैं फिर नया रखते हैं। यह भी तुम्हारा नया खाता होता है सुख का। दुःख का खाता चुकुत होता है। यह है बेहद की बात। वह 5 वर्ष2 खाता चुकुत करते हैं। यह तुम्हारा कल्प2 नई दुनिया में नया खाता होता है। यह तो बहुत सहज है। अगर बच्चे पढ़ाई पर पूरा ध्यान दें तो। पढ़ाई पर बहुत अटेन्शन चाहिए। ऐसे भी नहीं हम जाती करते हैं। ड्रामा अनुसार जितनी नूंध है वह होता है। भल 5 कहा जाता है इन में क्रोध है। इनमें तो कोई अकल नहीं। यह कहा जाता है बाकी ड्रामा ड्रामा की नूंध। कहेंगे इनको धक्का खाने का शौक है। छी छी संग में हैं। यह कहने में आता है। गायन भी है संग तारे कुसंग बोरे। तारे अर्थात उस पार ले जावे। बाप सर्वशक्तिवान है ना। सेकण्ड में 5 वर्ल्ड की सदगति करते हैं। कितना सहज है। सेकण्ड में बाप की पहचान मिली। और जीवनमुक्ति मिली राजा भी जीवनमुक्ति तो प्रजा भी जीवनमुक्ति* होगा। अभी नहीं है। तुम्हारे बुधि में बैठा है सतयुग में राजा रानी प्रजा सभी थे। हाईयेस्ट और लोयेस्ट थे। राजा है तो रंक भी है। परन्तु वहां सभी सुख के वासी है। वह हेडवल सिरताज। पवित्रता का ताज भी है। उनको कहा जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी। इसलिए लाइट का

देते है।रावणराज्य में पवित्रता काताजनहीं दिखाते हैं। यहताज तुम्हारा कब उतरता है।रावण आकर पवित्रता का ताज उतार देते हैं। किसकी टोपी उतारी जाती है ना। तुम्हारी पवित्रता सारी खत्म हो जाती है। यह भी तुम जानते हो अपवित्र राजाएं पवित्र राजाओं को पूजते हैं।हरएक राजा के पास मंदिर जरूर होता है। उनको भी पता नहीं पड़ता है कि हम सो पूज्य थे। हम सो फिर पुजारी बने हैं। तुमको पूरा मालूम हो गया। कैसे आपे ही पूज्य आपे ही पुजारी बनते हैं। 84 जन्मों बाद ही पुजारी बनते हैं।हिसाब है नापूरा2, वहलोग ॐ ओम, हम सो हम, अहम ब्रह्मास्मि आद का जो भी अर्थ करते हैं वह रांग।अनराईटियस भक्ति।राईटियस है ज्ञान। भक्ति में करेंगे कुछ भी वह बेसमझ से ही करेंगे। इसलिए गाया जाता है अंधे के औलाद अंधे। रावण को अंधा कहेंगे ना। इन ल०ना० को कोई वज़ीर आद थोड़े ही होंगा। फिर विकारी बनते हैं तो बुधि कम हो जाता है इसलिए दूसरे की राय लेते हैं। यह करें वा न करें।यहीराय लेंगे। इन्हों का राज्य तो चलता है इन्हों को थोड़े ही कोई राय देंगे। अभी तुमकोराय, श्रीमत मिलती है। बाप श्रीमत अथवा राय देते हैं। तो तुम्हारा एडवाईज़र हुआ ना। बेहद का बाप एडवाईज़ करते हैं। कहते हैं मैं तुमको बहुत अच्छी बिचार, राय देताहूं महाराजा बनाने लिए। ऐसे तो नहीं कहता हूं मैं भी महाराजा बनूंगा। नहीं। मीठे2 बच्चों तुमको यह मतदेकर इतना ऊंच बनाता हूं। तो इस पर चलना चाहिए ना। इसमें ही मेहनत है। काम विकार को भगाना, भूतों को भगाना है। काम तो ऐसा भूत है, तो·वा । इसलिए कामी पुरुष को कामी कुत्ता भी कह जाता है। बाप खुद बच्चों को कहते हैं बच्चे तुम कितने समझदार थे। हम तुमको फर्स्ट क्लास राय दे कितना ऊंच बना कर गये। यह भी ड्रामा अनुसार कहेंगे। इसमें जरा भीफर्क नहीं पड़ सकता। जो कुछ रचट चलती है ड्रामाअनुसार। तुम अपनी राजधानी स्थापन न करो यहहो ही नहीं सकता। ड्रामा में नूंध है। तुमपुरुषार्थ करते हो यह भी ड्रामाकराती है। ड्रामा अनुसार तुम जरूर करेंगे। ड्रामा तुमको पुरुषार्थ जरूर करावेंगी। पुरुषार्थ बिगर तो कुछ मिल नहीं सकता।पानी भी नहीं पी सकते। पुरुषार्थ बिगर तो चल भी न सको।पांव भी उठा न सको। बाप बैठ कर राईट मार्ग पर पुरुषार्थ कराते हैं।राईटस और अनराईटस का खेल भी है। तुम जानते हो इससमय है अनराईटसराज्य। इनके सारन्टी नहीं कहा जा सकता। यह तो पंचायती राज्य है। कितने पंच हैं। लोक सभा को ग्रुपंचायती। फ्लाने सभा की पंचायती। इनको राजधानी नहीं कहा जाता। कहा ही जाता है प्रजाका प्रजापर राज्य। अर्थात कुरु, कौड़व राज्य। तुमकोबहुत कहते हैं हमको कौड़व क्यों कहते हो। अरे यह तो गीता में भी है कौड़व और पाण्डव क्या करत भये।महाभारी विनाश का भीलिखा हुआ है। फाइनल विनाश हो जाता है फिर सतयुग त्रेता में आधा कल्प लड़ाई लगती ही नहीं। द्वापर में भी लड़ाई नहीं लगती लड़ाई भी मनुष्यों से, सिपाहियों से से होती है। प्रजा का प्रजा साथ नहीं होती है। जबबहुत बहुत वृधि हो सिपाही आद हो तब हो लड़ाई हो। आधा सुख आधा दुःख हो तो इसमें मज़ा ही क्या रहा। तुमसुख बहुतदेखते हो। बापने नाटक दुःख के लिए थोड़े ही बनाया है। बाप कहते हैं बच्चों तुम बहुतसुख देखते हो। दुःख तो पिछाड़ी में होता है। जब तुम तमोप्रधान बन जाते हो।ड्रामा प्लैन अनुसार।सो भी नम्बरवार पार्ट सभी काअपना2 है। मनुष्य पाप कितना करते हैं। क्या2 करते हैं। अखबारों में भी पापों की बातें पड़ी रहती है। अभी तुम बच्चों को बुधि में बैठता है। सो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। जब तक हम बाप को याद न करेंगे, सो भी उठते बैठते -चलते-फिरते।वह लोग तो कथाएं आद सुन कर फिर अपने धंधे धोरी में लग जाते हैं। वहतो है भक्ति मार्ग। भक्ति का कितना विस्तार है। झाड़ के पत्ते ढेर होते हैं। यह तो बहुत छोटा झाड़ है। इनका बीज रूप है बाप। उनको कहा जाता है वृक्षपति। इनका बीज ऊपर में है। जब एकदम पुरा जड़-जड़ीभूत झाड़ हो जाता है तब फिर सेपलिंग लगाने बाप को आना पड़ता है। बाप खुद बतलाते हैं मैं वे आता हूं। कितने असुरों के विघ्न पड़ते हैं। अत्याचार होते हैं। बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। इस पर

निश्चय भी होना चाहिए ना। निश्चयबुधि विगर राजाई कैसे स्थापन होगी। नम्बरवार ही निश्चयबुधि होते हैं।

यह है ही दुःखकीदुनिया। वहां तो डाक्टर्स हास्पीटल जेलखाने, ब्रैरी वैरीस्टर आद होते ही नहीं। बाकी फूल होंगे। फूल कब किसको दुःखनहींदेता। कांटे लग जाते है तो दुःख होता है। इनका तो नाम ही रखा है कांटों का जंगल। तुम किसको समझाते हो तो कितना माथा मारते हैं। बेहद का बाप से जरूर बेहद का वर्सा मिलेगा ना। उस समय अच्छा2भी करते हैं। अच्छा फिरहम आवेंगे। बस। फिर आवेंगे नहीं। फुर्सत नहीं। न शाहुकार को फुर्सत है न आफिसरों को फुर्सत है। वह यह सब भूले कैसे। इसमें तो पुरानी दुनिया का सभी कुछ भूलना पड़ता है। उन्हों को तो बहुत धन है। कारखाने आद हैं। वह कैसे उनको भूलेंगे। इतना अकल आवेगा। बड़े आदमियों को बुधि में कब आ न सके। वह तो समझते हैं हम यहां स्वर्ग में बैठे हैं। विमान है-, विजिल्लयाँ है महल आद सभी हैं। आगे यह थोड़े ही यह सभी थे। इसलिए बाप को गरीब निवाज कहा जाता है। आखिर वह दिन आता है जरूर। जब कि पुरानी दुनिया का विनाश हो नईदुनिया बनते हैं। गाते भी हैं आखिर वह दिन आया आज। जिस दिन का रास्ता तकते थे। भक्ति मार्ग में क्या2 करते थे। मुक्ति-जीवनमुक्ति के लिए कितना माथा मारते थे। अभी तुमको मिल जाती है तो फिर माथा मारने की दरकार ही नहीं। सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग यह चक्र फिरता रहता है। सतयुग से लेकर दिन चली आती है। घंटे मिनट, दिन सोमवार मंगल... यह चली आती है। परन्तु तुमको तो जितना हो सके टाईम लगाना है बाप को याद में। और कोई बातों घूसनानहीं है। बाकी हां हिसाब निकाल सकते हैं। एक दिन न मिले दूसरे दिन से। एक सेकण्ड न मिले दूसरे सेकण्ड से। ड्रामा में देखते हो टिक2 होती रहती है। चक्र फिरता रहताहै। यह घड़िया आद भी ड्रामा अनुसार बनी है। वह टिक2 है हद की। यह टिक2 है बेहद की। तुमको बाप बेहद के ड्रामा की टिक2समझाते हैं। बहुत बन्डर खाते हैं। यह कैसे हो सकताहै। पत्थर टूट कर मकान बना। फिर वही पहाड़ कैसे होंगे जो फिर मकान बनेंगे। इन बातें में चले जाते हैं। बाप कहते हैं मैं तो तुमको पावन होने की युक्ति बताने आया हूं। तुम मुझे याद करो। कल्प2 बाप यही युक्ति बताते हैं। समझाते हैं। तुम इन बातों का फिक्र नहीं करो। मुख्य फिक्र है पावन कैसे बनें। रात-दिन यही धून लगाते रहते हैं पतित-पावन....

अक्षर तो ठीक है। तुम सभी को भक्तियां। ब्राईड्स। एक बाप ही ब्राईडग्रुम है। सभी को सुखी बनाते हैं रावण सभी कोदुःखी करते हैं। ब्राईड्स को बाप बहुत सुख देते हैं। यह है बेहद की बात। बेहद का दुःख पहला नम्बर है काम कटारी से हिंसा करना। यह तो समझते हो ना रावणराज्य और रामराज्य है। रावणराज्य की आयु कोई बता न सके। रावण को जलाते रहते हैं। समझते कुछ भी नहीं। तुम जानते हो द्वापर से इनका राज्य शुरू हुआ है। यह सारे विश्वका दुश्मन है। इसलिए जब से भक्ति मार्गशुरू होता है तब से उनको जलाते आते हैं। हर वर्ष। क्यों जलाते हैं, क्या किया है यह कब खयाल में नहीं आता। रावण क्या चीज है जो दो शीश देते हैं। फिर ऊपर में गदहे का सिर लगाते हैं। यथाई हो जाती है ना। कहां वहराजाई, कहां राजाई, कहां मगुधाई। अभी तुम इन बातों को अच्छी रीत जानते हो। यहां सेतुम घर जाते हो तो भी कितना फर्क पड़ जाता है। यहां तो बाबा डायरेक्ट पढ़ा रहे हैं। खुशी भी होती है। फिर भी ऐसे क्या कहते हो बाबा याद नहीं पड़ता। भूल जाते हैं। हद का बाप जो गठर में गिराते हैं उनको याद करते हो और बेहद का बाप जो विश्व का कामालिक बनाते हैं उनको तुम याद नहीं कर सकते हो। लिखते हैं बाबा योग नहीं लगता। मैं मैं कहता हूं और बापको याद न करेंगे तो वर्सा कैसे मिलेंगे। लौकिक बाप के लिए तोकभी नहीं कहते कि भूल जाता हूं। पारलौकिक बाप के लिए कहते हो, लज्जा नहीं आती। शर्म नहीं आता। विश्व का मालिक बनाने वाले को भूल जाते हो। यह भी माया है ना। ड्रामा में उनका भीपर्ट है तुमको भूलाना। ऐसे तो नहीं मल्लयुद्ध में कोई अगर जबरदस्त है तोउस्ताद को कहेंगे यहहमकोअंगरी न लगावे। रावण अपने सेना का उस्ताद है। यह अपनीसेना

का उस्ताद है। यहखेल बना हुआ है। अभी बाप कहते हैं मुझे याद करो। और यह चक्र भी तो बहुत सहज है। यह भूलने की तो बात ही नहीं। बेहदका बाप है सत्य। वह तो सत्य ही बताते हैं। नए तो सतयुग की स्थापना होती है। अनेक बार सच्चखण्ड स्थापना होती है। फिर भी झूठ खण्ड हो जाता है। अभी तो है ही झूठ खण्ड। झूठी माया··गाते हैं ना। अभी तुम्हारी बुद्धि में सारी संसार आ गया है। और किसको भी पता नहीं। तुम्हारी बुद्धि में सारा ज्ञान है। और है भी बहुत सहज। ऐसे भी नहीं कोई जंगल में जाकर बैठना है। सभी बातें तुम बच्चों की बुद्धि में अच्छी रीत है। यहभी जानते हो यहनालेज बेहद का बाप ही देते हैं। जिसको भक्ति मार्ग में याद करते आये हैं। दुनिया नहीं जानती। हू बहू जैसे कल्प2 आते हैं नम्बरवारहू बहू ऐसे ही आवेंगे। भागेंगे जरूर। सारी राजधानी स्थापन हो जाती है। बाप बच्चों को गुल2 बना कर ले जाते हैं। सभी पवित्र जरूर बनना है। सभी का पार्ट अपना2 है। यह खेल है। घर में तो जरूर पवित्र हो जावेंगे। हरेक को अपना2 पार्ट मिला हुआ है। वहहोता है हद का ड्रामा। तुम एकान्त में बैठ इन बातों पर विचार मंथन करेंगे तो बहुत हीमज़ा आवेगा। हरेक आत्मा का अपना पार्ट है। वह भी अविनाशी है। आत्मा भी अविनाशी है। कितनी छोटी बिन्दी है। याद करना मुश्किल होता है। कितनी छोटी बिन्दी है। यह सभीसमझने की बातें है ना। बाप किसको कहा जाता है, शालीग्राम किसको कहा जाता। तुम अभी समझते हो। यह भी कई भूल जाते हैं। बाप कहते हैं आज तुमको गुह्य बातें सुनाता हूं। तो वह पहले कैसे सुना देंगे। एक सेकण्ड में कोई सम्पूर्ण बनता है क्या। टाईम लगता है। बाप कहते हैं देह सहित भूल जाओ। इन आंखो से जो कुछ देखते हो यह भूल जाओ। तो ग्रहण छूट जाये। इसमें कहां भी जाने करने की दरकार नहीं। वहसभी है हठ। बाप तो कहते हैं घर में ही बैठ कर तुमको समझाता हूं। यहभी समझते हो मौत सामने खड़ी है। बम्स ही ऐसे2 बनाते हैं कल्प पहले भी यह हुआ था। यही समय था। मुफ्त में शंकर को विनाश के निमित बनाया है। सभी कायदे सिरे होताहै। कोई चीज़ को आग लगती है वह भी कोई कारण से लगती है। मुफ्त में थोड़ी ही लग सकती है। बाबा ने समझाया था जो सेन्सीबुल सयाणे है वह खुद समझते हैं यह हम मौत के लिए बना रहे हैं। बनाने सिवाय रह न सके। उनको थोड़ी ही पता है कि बाप आया हुआहै। ऐसे नहीं कि बाप प्रेरणा आद करते हैं। बाप कैसे प्रेरणा करेंगे। यहड्रामा में सारा गुंथ है। बाप पर वा शंकर पर कोई दोष नहीं। यह अनादी बनाया बनाया ड्रामा है। इसको कहा है भावी। किसकी भावी? ड्रामा की। ड्रामाको कोई भी नहीं जानते। यह बाप आकर समझाते हैं और फिर यह भी कहते हैं बच्चेदेवी गुण धारण करो तब ही पावनबनेंगे। तुम पावन देवताओं की महिमाकरते हो ना। पतित हैं तो बेगर है। इस समय है इनसालवेन्ट। इरिलीजियस। कुछ भी समझते नहीं। वर्ल्ड में पीस तो इनके राज्य में थी। सो फिर से अभी स्थापन हो रही है। आगे थोड़ी ही ऐसे कहते थे। अभी सभी कहते रहते हैं शान्ति हो। शान्ति की प्राईज़देते रहते हैं। होता कुछ भी नहीं। अभी तुम जानते हो बाप को हम याद करते हैं। जो जितना जास्ती कोई याद करेंगे उनको प्राईज़ मिलती है। विश्व की बादशाही बाप देते हैं। तुम सभी बाप के मददगार खुदाई खिज़मत गार हो ना। तुम जानते हो हम सभी श्रीमत पर सारी विश्व की सर्विस करते हैं। जितना याद करेंगे उतना प्युर होते जावेंगे। और जितना पढ़ते होराजाई मिलती है। अच्छा। फिर भी बाप कहते हैं मुझे याद करो और राजाई को याद करो। बेहद के बाप को याद करने से विकर्म विनाश होंगे। और सृष्टि चक्र को याद करने तेराजाई मिलेगी। यह तो तुम्हारा काम है। कहां भी जाओ घूमो-फिरो कोईमना नहीं करते हैं। यह वशीकरण मंत्र है। माया पर विजय पाने कामंत्र। तो तुमको तिलक मिल जावेगा। यह है आत्मा के लिएरूहानी भोजन। आत्मा सुनती है। आत्मा ही धारण करती है। शरीर को भोजनरोज मिलता है। रूह को भोजन सिर्फ एक ही वारसंगम परमिलता है। जिसे तुम सर्वशक्तिवान बन जाते हो। कोई राजाई छीन न सके। अच्छा बच्चों को गुडमॉर्निंग।